आइए, करके देखें

यहाँ दी गईं सभी गतिविधियों को समावेशन को ध्यान में रखते हुए चुना गया है। ऐसी गतिविधियाँ जिनमें हर तरह की अस्मिता, योग्यता और व्यवहार (सक्रिय, संकोची) के बच्चे न सिर्फ़ बराबर से प्रतिभाग कर सकें बल्कि पूरा आनन्द भी लें। इन सभी गतिविधियों की विशेषता इनकी सरलता है, और इनमें कोई भी बच्चा खेल से बाहर नहीं होता है।

संगीत गतिविधि

यह गतिविधि छोटे समूह जिसमें 5–10 बच्चे हों, या बड़े समूह जिसमें 15–20 बच्चे हों, के साथ की जा सकती है।

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

आसान / मध्यम स्तर : हर बच्चे को अपने लिए एक मज़ेदार-सी गतिविधि (एक्शन) सोचनी होती है जिसे वो आसानी से कर सके। इसमें ताली बजाना, चुटकी बजाना, गर्दन को दाएँ-बाएँ घुमाना, पैर को ज़मीन पर धीरे-धीरे मारना, मुँह से सीटी बजाने या गुनगुनाने जैसी कुछ आवाज़ें निकालना, आदि शामिल हैं।

एक बच्चा अपनी सोची हुई गतिविधि को करता है, जैसे– ताली बजाना। समूह के बाक़ी बच्चे उसे दोहराते हैं। तीन से चार बार दोहराने के बाद अगले बच्चे की बारी आती है और वो अपनी सोची हुई गतिविधि करता है। इस तरह बारी-बारी से हर बच्चे का नम्बर आता है और खेल आगे बढ़ता जाता है। इस खेल में बच्चे ज़मीन पर बैठकर, खड़े होकर, कुर्सी पर बैठकर, आदि कैसे भी शामिल हो सकते हैं।

जटिल स्तर : बच्चे इस तरह के अलग-अलग वाक्य को अपने तरीक़े से कहते हैं। उदाहरण के लिए, कोई बच्चा गाना गाने की तरह कह सकता है, ''मैं कमला हूँ, और मुझे गाना पसन्द है;'' या फिर ''मेरा नाम रेशमा है और मुझे राजमा पसन्द है;'' ''मेरा नाम कबीर है, मुझे खेलना पसन्द है;'' आदि जैसे वाक्य बारी-बारी से अपनी तरह से गाकर, गुनगुनाकर, धीमी आवाज़ में फुसफुसाकर बोलते हुए खेल को आगे बढ़ाते हैं।

दृश्य कला गतिविधि

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

यह गतिविधि 5 से 6 विद्यार्थियों के छोटे समूहों में की जा सकती है। समूह के प्रत्येक विद्यार्थी को समूह के अन्य बच्चों को निर्देश देने का अवसर मिलता है। यह निर्देश अकसर चित्र बनाने से सम्बन्धित होता है। अपने निर्देश के बारे में सोचने के लिए विद्यार्थी के पास 1 मिनट का समय होता है। और फिर निर्देश का अनुसरण करने के लिए समूह के हर बच्चे को एक मिनट का समय दिया जाता है।

आसान स्तर : प्रत्येक विद्यार्थी बारी-बारी से उस किसी साधारण वस्तु या जीवित प्राणी के बारे में सोचता है जिसकी छवि की कल्पना की जा सकती है। वह उसका नाम पूरे समूह को ज़ोर से बोलकर बताता है, और तब समूह के बाक़ी विद्यार्थी उसका चित्र बनाते हैं।

मध्यम स्तर : प्रत्येक विद्यार्थी बारी-बारी से एक सरल पैटर्न या ड्राइंग बनाता है, और उसे दूसरे विद्यार्थियों को दिखाता है। दूसरों को यथासम्भव उससे मिलता जुलता चित्र बनाना होता है।

जटिल स्तर : प्रत्येक विद्यार्थी के पास 4 से 5 फ़्लैशकार्ड होते हैं। हर विद्यार्थी अपने फ़्लैशकार्डों पर कोई सरल चित्र या पैटर्न बनाता है। फिर सभी विद्यार्थी एक कार्ड अपने पास रखकर बाक़ी कार्ड को अपने समूह के सदस्यों के साथ अदल-बदल लेते हैं। इसके बाद, प्रत्येक बच्चा ख़ुद को मिले हुए सभी फ़्लैशकार्डों में बने चित्रों को बनाता है।

मध्यम और जटिल स्तर के लिए समय सीमा पहले स्तर की तुलना में कुछ अधिक होती है।

यह गतिविधि समावेशन को कैसे सम्बोधित करती है ?

प्रत्येक विद्यार्थी के विचार को न केवल उसकी अपनी ड्राइंग में, बल्कि दूसरों की ड्राइंग में भी जगह मिलती है। इससे सभी विद्यार्थी अपने साथियों के विचारों और अभिव्यक्तियों को स्वीकार करते हैं, और उनके साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। यदि कक्षा में कुछ दृष्टि बाधित विद्यार्थी हैं तो इस गतिविधि के लिए मिट्टी (क्ले) जैसे माध्यमों का इस्तेमाल किया जा सकता है।

विद्यार्थियों की ज़रूरतों और क्षमताओं के आधार पर इन गतिविधियों को बदला जा सकता है। इनका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी विद्यार्थी गतिविधियों में भाग ले सकें, और उनका आनन्द उठा सकें।

*इन दो गतिविधियों का सुझाव गुजरात के वडोदरा की एक दृश्य कलाकार (विज़ुअल आर्टिस्ट) और शिक्षिका **मालविका राजनारायण** ने दिया है। वे अज़ीम प्रेमजी स्कूलों के दृश्य कला और संगीत शिक्षकों को सहायता और संसाधन प्रदान करती हैं। आप अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, भोपाल में विज़िटिंग फ़ैकल्टी भी हैं।*

समावेशी संगीत कुर्सियाँ (म्युज़िकल चेयर्स)

भले ही कोई बूढ़ा हो या छोटा, सभी म्युज़िकल चेयर्स के खेल को पसन्द करते हैं। अधिकांश समूह खेलों की तरह, इसमें भी खिलाड़ी तब तक आउट होते रहते हैं जब तक कि केवल एक व्यक्ति शेष न रह जाए, और अन्त में उसी बचे हुए व्यक्ति को विजेता घोषित किया जाता है।

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

इस सामान्य खेल को यहाँ थोड़ा-सा बदलकर प्रस्तुत किया गया है। इसका श्रेय जापानियों को दिया जाता है जिसे हम 'समावेशी संगीत कुर्सियाँ' कह सकते हैं। इस खेल को इस प्रकार से खेला जाता है :

1. यह खेल 4 से 5 बच्चों के 2 से 5 समूहों में खेला जाता है।
2. प्रत्येक समूह के लिए गोलाकार में कुर्सियाँ रखें, कुर्सियों का पीठ वाला हिस्सा गोले के अन्दर की तरफ़ और बैठने वाला हिस्सा बाहर की तरफ़ होगा। खिलाड़ियों की संख्या से एक कुर्सी कम रखें। माने, यदि एक समूह में 5 खिलाड़ी हैं तो केवल 4 कुर्सियाँ रखें। (बैठने के लिए, कुर्सियों की जगह अख़बारों का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।)
3. जब बच्चे कुर्सियों के चारों ओर घूमें तो कोई संगीत बजाएँ।
4. जब आप संगीत बन्द कर दें तो प्रत्येक बच्चे को बैठने के लिए एक कुर्सी ढूँढ़नी होगी। वे कुर्सी खोजने के लिए पीछे नहीं जा सकते, केवल आगे की ओर बढ़ सकते हैं।
5. सभी बच्चों के लिए बैठना ज़रूरी है। इसलिए उन्हें उस बच्चे के लिए जगह बनानी होगी जिसे कुर्सी नहीं मिल पाई क्योंकि अगर कोई बच्चा खड़ा रहता है तो इसे पूरे समूह की हार माना जाता है।
6. जैसे-जैसे कुर्सियों की संख्या कम होती जाती है, खेल अधिक चुनौतीपूर्ण और मज़ेदार होता जाता है, और बच्चे एक दूसरे की गोद में बैठना शुरू कर देते हैं।
7. जब केवल एक कुर्सी बचती है तो वह समूह (या एक से अधिक समूह), जिसने अपने पूरे समूह को एक ही कुर्सी पर बैठाया है, विजेता होता है।

*यह गतिविधि हरियाणा के फ़रीदाबाद में रहने वाली एक विशेष शिक्षिका (स्पेशल एजुकेटर) **प्रतिमा शर्मा** द्वारा सुझाई गई है।*

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।